विधान प्रारम्भ

श्री अजितनाथ जिन पूजन

स्थापना

तर्ज – अनादिकाल से .... (समुच्चय पूजन)

कर्म जीत निज प्रीति अजित जिन हे सर्वज्ञ त्रिलोकीनाथ।
मन वचन तन से भक्तिभाव से तव चरणों में टेकें माथ।।
उर की उग्र व्यग्रता वश ही आज तुम्हें हम बुला रहे।
अपने चित् की निर्मल शय्या पर हम शाश्वत सुला रहे।।1।।

क्षेत्र बटेश्वर अजितेश्वर मम प्राणों में रच जाओ।
घृत सम रच जाओ आतम में पथ्य भोज्य सम पच जाओ।।
आतम के हर एक अंश पर हे जिन तुम्हें बसाता हूँ।
तुम जैसा बनने की खातिर मैं तव पूज रचाता हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल स्वभाव से शीतल है अरु निर्मलता भी इसका भाव।
जल तव चरणों में क्षेपण कर, मैं भी पाऊँ नित्य स्वभाव।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनादि शीतल पदार्थ सब तन का ताप मिटाते हैं।
चेतन को शीतलता पाने तुमको गन्ध चढ़ाते हैं।।

क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पुनर्जन्म से क्षत है उज्ज्वल है अरु अविकारी।
हे जिन तव पद पुंज चढ़ा हम गहें पन्थ जो हितकारी।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित सुन्दर कोमल मन को सदा लुभाता है।
तव पद में जो इसे चढ़ाता उसको निज गुण भाता है।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वैद्य नहीं नैवेद्य जगत में फिर भी भविजन खाते हैं।
क्षुधा भुक्ति के वांछक जन ही, तुमको सदा चढ़ाते हैं।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक दीपक सूर्य चन्द्र भी अंतर तम नहीं हर पाये।
अन्तर तक को हरने हेतु दीप जलाकर हम लाये।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशदिश दशविध धूप जलाकर कर्म एक भी नहीं टला।
तव चरणों में खेकर इससे मिल जाती है सिद्ध शिला।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल के बिन निष्फल ही सब षट् ऋतुओं के फल जानो।
मोक्ष महाफल ही सत् फल है रत्नत्रय का फल मानो।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फलादि वसु द्रव्य मिलाकर तव चरणों में लाए हैं।
ज्ञान दर्श चारित्र सुखादि वसु गुण पाने आये हैं।।
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

चौपाई छंद

ज्येष्ठ अमावस गर्भ में आये, विजयादेवी अति सुख पाये।
देवों ने आ हर्ष मनाया, धनद रतन नव माह लुटाया।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी दशमी अति प्यारी, जन्म हुआ तिहुँ लोक सुखारी।
मेरु पर सुर न्हवन कराया, इन्द्रों ने आनन्द रचाया।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लदशमीदिने जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघु सुदी दशमी तप धारा, भव तन भोग अनित्य निहारा।
पंच मुष्टि कर लोंच सुकीना, निज में निज वे हुए सुलीना।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लदशमीदिने तपकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष सुदी ग्यारस शुभ नामी, केवलज्ञान लह्यो जिन स्वामी।
समवसरण देवेन्द्र रचाया, भव्यों को जिन तत्त्व बताया।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्ला-एकादशीदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी पाँचें शिवदायी, कूट सिद्धवर मुक्ति पाई।
शाश्वत शुद्ध रूप निज पाया, सिद्धालय आवास बनाया।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लपंचमीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चौपाई छंद

हे प्रभु अजितनाथ जिनदेवा, करें सभी हम तव पद सेवा।
भक्ति से सब अघ मिट जाते, पुण्य कुंज उर में खिल जाते।।
रोक शोक भयनाशक पूजा, इस सम पुण्य नहीं कोई दूजा।
जिनवर की जो भक्ति करते, जनम-जनम के पातक हरते।।
आधि-व्याधि बस कष्ट मिटावें, अजितनाथ जिन पूज रचावें।
हर मंगल को दर्शन करना, अन्तराय सिन्धु से तरना।।
मंगल को तुम मीठा छोड़ो, अजितनाथ से नाता जोड़ो।
दीपक ध्वज फल मिष्ट चढ़ाओ, अपना सोया भाग्य जगाओ।।
पंच वर्ण की ध्वजा चढ़ावें, अरु गौ घृत का दीप जलावें।
खाली हाथ कभी न आना, लड्डू फल पकवान चढ़ाना।।
भक्तिभाव से पूज रचाते, मनवांछित फल वो पा जाते।
धन की कमी कभी न होगी, भवसुख भोगि बनो फिर योगी।।
शौरीपुर जिन भूमि कहायी, जिसने यहाँ की शुभ रज पाई।
उसका सोया भाग्य जगा है, अशुभ कर्म सब तुरत भगा है।।

सुर नर मुनि गण वंदन आते, प्रभु दर्शन से सब सुख पाते।
भक्तिभाव वश भक्त पुकारें, अजितनाथ मम ओर निहारें।।
घोर असाता में दे साता, तव भक्ति चिंतित फल दाता।
मिटे नहीं जब तक भव फेरा, पद-कमलों में रहे बसेरा।।
तव चरणों में दास पड़ा है, कर्मों ने इसको जकड़ा है।
मेरा बेड़ा पार लगाओ, भवबन्धन से शीघ्र छुड़ाओ।।

छंद-दोहा

करूँ नित्य ही वन्दना, अजितनाथ जिनदेव।
जबलौं शिव-पद ना लहूँ, करूँ चरण नित सेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-घत्ता

हे अजित जिनन्दा, नशि विधि फंदा, अन्तर द्वन्द्वा परिहारी।
शिवसुख के कन्दा, यजि रवि चन्दा, मुनि सुर वृन्दा हितकारी।।
वसुनन्दी ध्यावे, पूज रचावे, तव गुण गावे पार करो।
भवदधि तिर जाऊँ, शिवसुख पाऊँ, सबका ही उद्धार करो।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलय

(अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य)

तर्ज - अनादिकाल से जग में...

दर्शन आवरणी कर्मों को किया नष्ट आपने देव।
केवल दर्श आपने पाया इन्द्र नरेन्द्र करी तव सेव।।
अपने दर्शन की आवरणी को भी मैं तो नाश करूँ।
तबलों अजितनाथ युग पद में अहो रात्रि मैं वास करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदर्शनसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म आपने पूर्ण क्षीण कर दीना है।
लोकालोक प्रकाशक पाया केवल ज्ञान नवीना है।।
वही स्वाभाविक ज्ञान निजी में निज में ही प्रकटाऊँगा।
तबलों अजितनाथ जिनवर को निशदिन अर्घ्य चढ़ाऊँगा।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तज्ञानसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय महा दुख दाता भव का परमुख कारण है।
दर्शन और चरित्र दोनों को किया आपने वारण है।।
अष्टा विंशति मोहनीय हनि सुख अनंत तुम पाया है।
वही अनंत सुख पाने हेतु मैंने अर्घ्य चढ़ाया है।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसुखसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिहीन हो भव-भव भटके, अंतराय आधीन हुए।
तुमने नष्ट किया पल भर में और पूर्ण स्वाधीन हुए।।
नंत शक्ति को पाकर तुमने शिव-रमणी परणाई है।
अपनी मुक्ति-रमा को पाने मैंने पूज रचाई है।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्यसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

दर्शन ज्ञान नंत सुख वीरज, घाति नाशि कर पाया है।
अनंत चतुष्टय पाने हेतु, मैंने अर्घ्य चढ़ाया है।।
अजितनाथ की पूजन करने, क्षेत्र बटेश्वर आया हूँ।
बटुकेश्वर तव भक्ति करके, मन में अति हर्षाया हूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदर्शनादि-अनन्तचतुष्टयसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

द्वितीय वलय
(अष्ट प्रातिहार्यों के अर्घ्य)

तर्ज - नीर गंध अक्षतान्...

तरु अशोक के समीप आप हैं विराजते।
ज्यों क्षितिज शीश पे है भास्कर राजते।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य शोभनीय पीठ सिंह से है भासता।
हैं अधर जिनेन्द्र नाथ पूज्य मेरे शासता।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासनसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र आप पर राजते हैं चंद्र सम।
आप नाथ लोक त्रय जानते हैं भव्य हम।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभा मंडल भासता है दिव्य देह साथ में।
भव्य निज सप्त भव देखते हैं पास में।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि नित्य ही तीन संधि में खिरे।
धारता जो भव्य नर दु:ख सिंधु भी तिरे।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि देव गण मोद पाय कर रहे।
मानों पुण्य पुंज से वे चित्त अपना भर रहे।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष ढोरते सदा चौंसठी चाँवरे।
मानों मुक्ति कांत संग पड़ रही हैं भाँवरे।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं चामरसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभि से नभ गूंजता अनंत है।
जय जयकार घोष से तो होता पाप अंत है।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभिसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

अष्ट प्रातिहार्य को भजकर अष्ट कर्म को नष्ट करूँ।
वसु गुण पाकर हे जिनवर मैं मुक्ति रमा का वरण करूँ।।

जबलौं मुक्ति रमा न पाऊँ मैं द्वारे नित आऊँगा।
पूर्ण समर्पित तव पद होकर मैं तव गुण ही गाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरु-आदि अष्टसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

(सोलह कारण भावना के अर्घ्य)

तर्ज - पीछी रे पीछी...

दर्श विशुद्धि भावना मन के, मिथ्या मत को धोवे।
जो कोई भवि भावे इसको, सो तीर्थंकर होवे।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनयवान् नर पुंगव होवें सर्व गुणों के धारी।
अवगुण दु:ख पाप परिहारक तीरथ का अधिकारी।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्नतातीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलवान् नर सुर सुख पाकर चक्री भी बन जाता।
कल्पवृक्ष के भोग भोगकर, शिव रमणी भी पाता।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचारतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निशदिन ही जिन वच चिंतन में लीन रहा करते हैं।
केवलज्ञान निधि वे पाते, अंतर तम हरते हैं।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेग भावना भाकर प्राणी, हो जाता वैरागी।
गृह तन भोगों को तजकरके होता निज अनुरागी।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवेगतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग शक्ति सम करना भैया, आगे भावन भाओ।
इसी त्याग की शक्ति से ही तुम जिनवर बन जाओ।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्यागतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशविध तप शिव सुख दाता, आतम शोधक भाई।
तप की शक्ति गणधर भी तो, पूरी न कह पाई।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि में सह योगी, बनता मन वच तन से।
पूजनीय वह निश्चित होता, जग में हर जन जन से।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैयावृत्ति करने से नहीं आधि व्याधि दुःख होवे।
कामदेव सम काया पाकर, बीज मोक्ष का बोवे।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हद् भक्ति अर्हद् पद की निश्चित दाता जानो।
जो भी भवि जन पूज रचावे सो भावी शिव मानो।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार पालने वाले हैं आचार्य हमारे।
कलिकाल तीर्थंकर सम हैं जिनवृष के रखवारे।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वाद्वशांग धारी मुनि पाठक ज्ञान ध्यान तप लीना।
भक्ति वंदन पूजा करके बनो आप परवीना।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुततीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वा मुनिवर की भक्ति सर्व असाता नाशे।
पाप पंक प्रक्षालक सुख का यही जिनागम भासे।।

षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षड् आवश्यक श्रावक यति के पाले अरु जो पूजे।
लोक पूज्य तीर्थंकर बनकर, मुक्ति रमा पति हूजे।।
षोडशकारण शिवसुखकर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकपारिहाणितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म प्रभावक हैं जो ज्ञानी, जिन शासन जयवंता।
सिद्धालय में जाय विराजे, बने कर्म के हंता।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनातीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सल भाव धरे जो प्राणी, जीव मात्र उपकारी।
राग द्वेष अरु कर्म विजेता, बने अजित अविकारी।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्वतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

षोडशकारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
शुद्धभाव से जो भवि भावे, तीर्थंकर बन जाता।।
मैं भी अजितनाथ के पद में, नित प्रति अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आज नहीं तो अन्य कभी भी, तुमसा ही बन जाऊँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धि आदिषोडशकारणभावनातीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

(10 जन्मातिशय + 10 केवलज्ञानातिशय + 14 देवकृतातिशय के अर्घ्य)

तर्ज – पाँचों मेरु असी जिनधाम...

अतिशय रूप सुगंधित पाय, निशदिन पूजों चित हुलसाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तरूपवान् जन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

पुष्प समा सुरभित तन पाय, सुरतरु के शुभ पुष्प चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धिततनजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

निर पसेव तव सुन्दर काय, स्वर्ण गिरि सम द्युति प्रकटाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेदाभावजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

करें आहार निहार न होय, सुर सम तव निश्चल तन जोय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं निहाराभावजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

हितमित प्रिय वचन नित गाय, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रियहितवचनजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हरि हर चक्री को बल थाय, तुम बल को कोउ पार न पाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्यबलजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

धेनु वत्स सम निर्मल भाव, रुधिर श्वेत होता सम भाव।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिरजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शुभ लक्षण तन में उपजाय, महापुण्यफल दाता भाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं 1008 शुभलक्षणयुक्त तनजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

समचतुरस्र संस्थान स्वरूप, तुमको जपें इंद्र मुनि भूप।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुरस्रजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

संहनन वज्र वृषभ नाराच, वज्र समान कर्म गिरी वाँच।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराचसंहननजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

तर्ज – मेरी लगी गुरु संग प्रीत

शत योजन सुभिख कियो, देवों ने आकर।
तुम हुए अजित भगवंत, केवल बुध पाकर।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकशतयोजनसुभिक्षता-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

तुम गगन गमन करते, कमलों से ऊपर।
सुर नर पशु गमन करें, नभ में वा भू पर।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमन-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

चऊँदिशि तव वदन दिखें केवल का अतिशय।
तव पद पूजें जे नर, पावें गुण अतिशय।।

मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दिश मुख मंडल केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

तुम अदया भाव विहीन, करुणामय स्वामी।
सब जीव शरण तव पाएँ, सुख भी अविरामी।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभाव-अभाव-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

उपसर्ग रहित जिनदेव, जीवों के रक्षक।
शुभ अतिशय केवलि का, पापों का भक्षक।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपसर्गकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

तुम कवलाहार विहीन, जिनवर मम देवा।
मम क्षुधा नशाओ देव, करते नित सेवा।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाराभाव-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

विद्याधर आतम लीन ईश्वर बड़ भागी।
छद्मस्थ होत मदहीन उभय संग त्यागी।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्या-ईश्वरत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

नख केश वृद्धि हो नाहिं, केवल की महिमा।
तुम पाप रहित जिनदेव, कौ गाये गरिमा।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धिविहीन-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

तव अनिमिष दृष्टि अपार, शक्ति घनी वर्ते।
नित लोकालोक निहार, ज्ञान तनी झलके।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृष्टि-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

तन छाया रहित जिनेश, अतिशय ये पाया।
चउ घाति विहीन महेश, तव पद मन भाया।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं तनछायारहित-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

खिरे अर्धमागधी भाष, आत्म गुण प्रकटाने।
करूँ अष्ट द्रव्य से पूज, शिव रमणी पाने।।
मुझे मिल गए मन के मीत दिनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्धमागधीभाषासुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

चहुँ दिशा हो मैत्री भाव बैर सब मिट जाने।
गर हों भी विरोधी जीव प्रेम से मिल जाने।।
वहाँ होती मन की जीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं परस्परमैत्रीभावसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

दश दिश हो निर्मल स्वच्छ भाव शीतल पाने।
सुरकृत अतिशय ये पुनीत, सभी के मन भाने।।
वहाँ होय न ग्रीषम शीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशदिशानिर्मलसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

है मेघ रहित आकाश विमल निर्मल जाने।
हर्षित झूमे आकाश भक्ति में ही माने।।
मानो बन गया गगन विनीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाकाशसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

षट् ऋतुओं के फलफूल एक संग खिल जाने।
मानो सज गई धरती प्रभु के गुण गाने।।
सबको हो सुख परतीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्-ऋतुफलित-पुष्पफलसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

होए पृथ्वी काँच समान जहाँ जिनवर जाने।
नहीं होए कटक अरु कष्ट सभी जन सुख पाने।।
अघ होते वहाँ भयभीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्पणवत् पृथ्वीतलसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

चरणों में रचते देव कमल स्वर्णिम जानें।
चउ अंगुल अधर जिनेंद्र अतिशय पहचानें।।

यह धनद कुबेर की नीति दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं चरणकमलतलस्वर्णकमल-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

जय घोष गगन से होए जिन अतिशय जाने।
नभ धरती सब गुंजाए सृष्टि प्रमुदित माने।।
भवि करते पुण्य प्रहीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभसि जयघोषसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

बहे मंद सुगंध बयार, भव्य चित हर्षाने।
जिनवर चरणों में आए, भवातप मिट जाने।।
यह सुरगण भक्ति पुनीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्दसुगन्धपवन-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

शुभ गंधोदक की वृष्टि मानो बरसे मोती।
सब चित्त विमल कर देय, आत्म मंजन करती।।
ये गंधोदक परतीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं गन्धोदकवृष्टिसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

भूमि निष्कंटक होय जहाँ जिन गमन करें।
केवलज्ञानी जिनदेव सभी मिल नमन करें।।
नहीं रहा कष्ट का लेश दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कटंकभूमि-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

केवलज्ञानी जिनदेव, सभी के मन भाते।
हर्षित सृष्टि संपूर्ण, प्रमुदित हो नाचे।।
वसुधा गाए सुर गीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं हर्षितसृष्टि-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

जब गमन करें जिनदेव, चक्र आगे चाले।
उस धर्म चक्र को देख, सभी दुर्गुण भागे।
तुम चक्री धर्म अजीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रगामिधर्मचक्र-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

जय आत्मजयी जिनदेव, अमंगल सब हरते।
मंगल वसु संग चलें, कर्म सब ही टलते।।
तब महिमा वर्णनातीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलद्रव्य-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

महार्घ्य

जिनवर के अतिशय पूजन से, निज में अतिशय होता है।
पुण्यवान नर पुंगव ही तो पुण्य बीज शुभ होता है।।
अजितनाथ के चरणों में जो महा अर्घ्य क्षेपण करता।
भव सागर को तैर क्षणिक में, मुक्ति रमा को वह वरता।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तरूपवानादि चतुस्त्रिंशत् अतिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यपुष्पांजलि क्षिपेत्

समुच्चय जयमाला

चौपाई छंद

अजितनाथ जित काम विकारी, जीव मात्र के तुम हितकारी।
तीन लोक के नाथ कहाये, भव्य जनों को तुम नित भाये।।

जितशत्रु जी पिता तुम्हारे, माँ विजयादेवी के प्यारे।
वय लख पूर्व बहत्तर पाई, जीवन पूर्ण बना सुखदाई।।

साढ़े चार शतक धनु काया, मानो सुमनों का वन पाया।
तप्त सुवर्णमय आभा तन की, पीड़ा हरती है भविजन की।।

उल्कापात विघटती देखी, बारह भावन तब तुम लेखी।
कीना पंच मुष्टि से लोचन, मुनि बन किया आप निज चिंतन।।

बारह वरष घोर तप कीना, पाया केवल ज्ञान अक्षीना।
समवसरण देवेन्द्र रचाया, भव्य जनों ने शिव पथ पाया।।

ॐकार मय खिरती वाणी, सुन कर तिर गए लाखों प्राणी।
चतुर्थ काल आदि तीर्थंकर, गिरि सम्मेद से हुए शिवंकर।।

उत्तर देश भारत में प्यारा, मानों उत्तम देश हमारा।
जिला आगरा क्षेत्र बटेश्वर, यही विराजे अजित जिनेश्वर।।

मूर्ति आपकी अतिशयकारी, अर्चन से बनते अविकारी।
क्षेत्र बटेश्वर जग में प्यारा, सौरीपुर का है शुभ द्वारा।।

भूप सुप्रतिष्ठित अरु विमलासुत, धन्य श्रमण अरु अमला युत।
मुक्ति आपने यहाँ से पाई, सबको शिव की राह बताई।।

सिद्धक्षेत्र शौरीपुर पावन, उत्तम साधक को मन भावन।
वीतराग सर्वज्ञ दिगंबर, अजितनाथ की प्रतिमा सुंदर।।

आल्हा ऊदल ने बनवाई, बावन गढ़ जीते नर राई।
कच्चे धागे से तुम आये, आते ही अतिशय दिखलाये।।

सबसे ऊँचा अजित जिनालय, सेवक सम हैं अन्य शिवालय।
यमुना उल्टी यहाँ पर बहती, भव्यों से ये अतिशय कहती।।

होय अदालत में जो उलझा, प्रभु भक्ति से निश्चित सुलझा।
मंगल शनि राहु अरु केतु, पूजन से मिलता शिव सेतु।।

दीपक ध्वज फल मिष्ट चढ़ाओ, अपना सोया भाग्य जगाओ।
रोग शोक दु:ख मिटता सारा, खुलता सर्व सुखों का द्वारा।।

होय विघ्न घर में अति भारी, भौम यात्रा करि सुखकारी।
नाम मात्र जो जपता प्राणी, निश्चित सिद्ध बने वह ज्ञानी।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप – ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविघ्नहराय सर्वकार्यसिद्धिकराय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नम:।

दोहा

अजितनाथ के युग्म पद, जो उर लेत बसाय।
नर सुख सुर सुख भोगकर, निश्चित मुक्ति पाय।।

शान्तये शान्तिधारा

घत्ता छंद

हे अजित जिनेशा, कर्म हनेशा, मुक्ति हमेशा शिव देता।
निर्ग्रंथ सुभेषा, रमा महेशा, तव पद शेषा करि सेवा।।
हम शीश झुकाते, पूजा गाते, अर्घ्य चढ़ाते सुखकारी।
मम दु:ख मिटाओ, पार लगाओ, बसो हृदय हे अविकारी।।

दिव्यपुष्पांजलि क्षिपेत्

आरती

शक्ति दर्श सुख ज्ञान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजिनाथ भगवान की।।

बटुक नाथ जिनदेव हमारे, मणिया देव कहाते हैं।
इन्द्र देव गण पूजन करने, रत्न दीप फल लाते हैं।।
निज आतम के ध्यान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान की।।

गर्भ जन्म तप अवधपुरी में, केवल बुध भी पाया है।
कूट सिद्धवर शिखर गिरि से, मोक्ष महाफल पाया है।।
सिद्धालय उद्यान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान की।।

आल्हा ऊदल ने भक्ति से, बावन गण ये जीते हैं।
जो भी आरती करे आपकी, शुद्धातम रस पीते हैं।।
शुभ शिवमग परधान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान की।।

मंगल को जो मीठा तज के, व्रत जप पूजन करते हैं।
अजितनाथ की करें अर्चना, वे भव वारिधि तरते हैं।।
आतम के सम्मान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान की।।

निज आतम के सब गुण पाने, मैं चरणों में आया हूँ।
दुनियाँ में सुख मिला कहीं ना, भव–भव में भरमाया हूँ।।
शौरीपुर शुभ थान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान की।।

श्री अजितनाथ विधान

क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर

मंगल आशीर्वाद

परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसन्त
श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्दजी मुनिराज

लेखक

एलाचार्य मुनि वसुनन्दी

सम्पादक

मुनि ज्ञानानन्द

कृति -
श्री अजितनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद
परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसन्त
श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्दजी मुनिराज

लेखक
एलाचार्य मुनि वसुनन्दी

सम्पादक
मुनि ज्ञानानन्द

संस्करण - द्वितीय 2014

प्रतियाँ - 5000

सहयोग राशि - 10/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

प्राप्ति स्थान

.....

मुद्रण व्यवस्था
प्री एलविल सन (संजय शास्त्री), जयपुर
+ 91 9875 15 14 14

पुरोवाक्

- एलाचार्य वसुनन्दी मुनि

जिसप्रकार प्रज्वलित दीपक को निज करतल धारण करके चलने वाला पथिक घनघोर अन्धकार में भी अपनी मंजिल तक निरन्तर गमनशील रहकर प्राप्त कर ही लेता है, एक रज्जू का सहारा लेने मात्र से बहुत गहरे कूप में पड़ा हुआ व्यक्ति भी बाहर निकल आता है, उसीप्रकार पंच परमेष्ठी की भक्ति रूप प्रज्वलित दीपक जिसके हृदय में विद्यमान है, वह सिद्धालय तक अवश्य ही पहुँच जाता है। भव-कूप में पड़े हुए जीवों के लिए भक्ति ही सुदृढ़ रज्जू के समान है। भव-वारिधि से तिरने के लिए भक्ति ही उत्तम नौका है।

जैसा कि पूजन में पढ़ते हैं -

यह भव-समुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम पावन जथारथ भक्ति वर नौका सही।।

- देव-शास्त्र-गुरु पूजन

आचार्य भगवन् श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने अष्ट पाहुड़ में लिखा है -

जिणवर चरणांबुरुहं जे णमंति परम भत्ति रायेण।
ते जम्म बेलि मूलं खणंति वर भाव सत्थेण।।

अर्थ - जो परम भक्ति के अनुराग से युक्त होकर जिनेन्द्र भगवान के युगल चरण-कमल में प्रणाम/नमस्कार करते हैं, वे भव्य जीव भक्ति रूपी तीव्र अस्त्र के द्वारा के द्वारा जन्म-मरण रूपी वृक्ष/बेल की जड़ को नष्ट कर देते हैं।

प्रस्तुत कृति **क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर** में श्री अजितनाथ भगवान का पूजन-विधान है। यह भव्य जीवों के विघ्नों को, रोगादि को, विकारों को, प्रशस्त मनोरथों को तथा कर्मों से विजय दिलाने में समर्थ है।

आचार्य भगवन् समन्तभद्र स्वामी ने वृहद् स्वयंभू स्तोत्र में लिखा भी है -

अद्यापि यस्याजितशासनस्य, सतां प्रणेतुः प्रतिमंगलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परमं पवित्रं, स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके।।

अर्थ - आज भी श्री अजितनाथ भगवान का शासन सज्जनों के लिए प्रणाम करने वालों के लिए मंगल करने वाला है। जो भव्य जीव अजितनाथ भगवान का नामोच्चारण मात्र भी करते हैं, उन महानुभावों के मनोरथ की सिद्धि होती है।

जिनेन्द्र भक्ति-पूजा या अर्चना आत्मा का परमात्मा बनाने का हेतु है। कारण के बिना कार्य की सिद्धि नहीं होती।

प्रस्तुत कृति का सृजन आत्महितार्थ किया है, विषय-कषाय वंचनार्थ ही लेखन हुआ है। इस कार्य से ख्याति, पूजा व लाभादि की कोई भावना नहीं है। इसके सम्पादक संघस्थ मुनि ज्ञानानन्द को, पाण्डुलिपि संशोधक बा.ब्र. शुभाशीष भैया को, अपने न्यायोपार्जित द्रव्य का सदुपयोग करने वाले सुधी श्रावकों को व प्रकाशक संस्था के सभी महानुभावों को तथा यत् किंचित् सहयोगी सभी साधकों को यथायोग्य प्रति नमोऽस्तु, समाधिवृद्धिरस्तु एवं धर्मवृद्धि शुभाशीष।

जैनं जयतु शासनम्
सर्वेषां मंगलं भवतु
ॐ ह्रीं नमः

कश्चिदल्पज्ञः श्रमणः
जिनतर चरणाम्बुज चंचरीक

श्री अजितनाथजिनस्तवनम्

– आचार्य समन्तभद्र स्वामी कृत

यस्य प्रभावात् त्रिदिव–च्युतस्य
क्रीडास्वपि क्षीबमुखाऽरविन्दः।
अजेयशक्तिर्भुवि बन्धुवर्गश–
चकार नामाऽजित इत्यबन्ध्यम्।।1।।

अर्थ – जिनके प्रभाव से जो देव स्वर्ग से अवतीर्ण हुए, उनका कुटुम्बी समूह बालक्रीड़ाओं में भी हर्षोन्मत्त मुख–कमल से युक्त हो जाता था तथा जिनके प्रभाव से वह बन्धुवर्ग पृथ्वी पर अजेय शक्ति का धारक रहता था और इसलिए उस बन्धुवर्ग ने जिनका अजित यह सार्थक नाम रखा था।

अद्याऽपि यस्याऽजितशासनस्य
सतां प्रणेतुः प्रतिमङ्गलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परम–पवित्रं
स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके।।2।।

अर्थ – परवादियों के द्वारा अविजित अनेकान्त मत से युक्त तथा सत्पुरुषों के प्रधान नायक जिन अजितनाथ भगवान का अत्यन्त पवित्र नाम आज भी अपने मनोरथों की सिद्धि के इच्छुक जन–समूह के द्वारा प्रत्येक मंगल के लिए सादर ग्रहण किया जाता है।

यः प्रादुरासीत्प्रभुशक्तिभूम्ना
भव्याऽऽशयालीनकलङ्कशान्त्यै।
महामुनिर्मुक्त – घनोपदेहो
यथाऽरविन्दाऽभ्युदयाय भास्वान्।।3।।

अर्थ – ज्ञानावरणादि कर्मरूप सघन आवरण से रहित जो गणधरादि देवों में प्रधान अथवा प्रत्यक्षज्ञानी अजितनाथ भगवान भव्यजनों के हृदय में संलग्न अज्ञान अथवा उसके कारणभूत ज्ञानावरणादि कर्मरूप कलंक की

शान्ति के लिए जगत् का उपकार करने में समर्थ वाणी के माहात्म्य विशेष अथवा प्रभुत्वशक्ति की प्रचुरता से उस तरह प्रकट हुए थे, जिस तरह कि मेघरूप आच्छादन से मुक्त सूर्य कमलों के विकासरूप अभ्युदय के लिए प्रकट होता है।

येन प्रणीतं पृथु धर्म–तीर्थं
ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम्।
गाङ्गं हृदं चन्दन–पङ्क–शीतं
गज–प्रवेका इव घर्म–तप्ताः।।4।।

अर्थ – जिन अजितनाथ भगवान के द्वारा प्रकाशित अत्यन्त विस्तृत एवं श्रेष्ठ धर्मरूपी तीर्थ अथवा धर्म के प्रतिपादक श्रुत को पाकर भव्यजीव संसार–परिभ्रमण रूप क्लेश को उस तरह जीत लेते हैं, जिस तरह कि सूर्य के आताप से पीड़ित बड़े–बड़े हाथी चन्दन के द्रव्य के समान शीतल गंगा नदी के द्रह–अगाध जल को पाकर सूर्य के संताप दुख को जीत लेते हैं।

स ब्रह्मनिष्ठः सममित्र–शत्रु–
र्विद्याविनिर्वान्त–कषाय–दोषः।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा
जिनश्रियं मे भगवान् विधत्ताम्।।5।।

अर्थ – जिन्होंने परमागम के ज्ञान और उसमें प्रतिपादित मोक्षमार्ग के अनुष्ठान रूप विद्या के द्वारा कषायरूपी दोषों को अथवा द्रव्य क्रोधादिरूप कषाय और भाव क्रोधादि रूपी दोषों को बिलकुल नष्ट कर दिया है, जो शुद्ध आचरणस्वरूप में स्थित हैं, जिन्हें मित्र और शत्रु समान हैं, जो आत्मा की अनन्त ज्ञानादि रूप लक्ष्मी को प्राप्त कर चुके हैं और जिन्होंने अपने आपको जीत लिया है अर्थात् जो इन्द्रियों के अधीन नहीं हैं, वे अन्तरंग–बहिरंग शत्रुओं के द्वारा अपराजित अजितनाथ भगवान मेरे लिए आर्हन्त्य लक्ष्मी–अनन्त ज्ञानादि विभूति प्रदान करें।